REVIEW OF RESEARCH

जनजातीय समाज में संचार के साधन और राजनीतिक समाजीकरण

Dr. Sunita Baghel

Guest Faculty , Department of Political Science , University of Allahabad, Prayagraj.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

प्रस्तावना

राजनीतिक समाजीकरण का अध्ययन राजनीति के समाजशास्त्र की एक केन्द्रीय विषयवस्तु है। राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन करने वाले समाज वैज्ञानिकों ने इस तथ्य को विश्लेषित करने का प्रयत्न किया है कि व्यक्ति किस प्रकार से राजनीतिक मूल्यों, व्यवहार प्रतिमानों और राजनीतिक विचारधाराओं को ग्रहण करता है। राजनीतिक प्रशिक्षण और राजनीतिक व्यवहार के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन राजनीतिक समाजीकरण के अध्ययन की केन्द्रीय विषयवस्तु है। समाजीकरण की प्रक्रिया का अध्ययन न केवल व्यक्तिगत व्यवहार बल्कि राजनीतिक व्यवस्था की क्रियाशीलता को समझने के लिए आवश्यक है।

प्रत्येक शिशु किसी पीढ़ी, नृजातीय (संजातीय) समूह, जाति या सामाजिक वर्ग भौगोलिक स्थान तथा राष्ट्र में जन्म लेता है। समाज के सदस्य के रूप में अपना स्थान ग्रहण करता है, परन्तु जन्म के समय शिशु शारीरिक दृष्टि से असहाय और पूर्णतः बड़े लोगों पर निर्भर होता है। प्रारम्भ में माता–पिता व परिवार के अन्य सदस्य उसकी आवश्यकताएँ पूरी करते हैं तथा अन्य लोगों से अन्तः क्रियाओं के परिणामस्वरूप ही उसका व्यवहार सीख द्वारा रूपान्तरित होता है। सीखने की वह प्रक्रिया, जो नवजात शिशु को एक सामाजिक प्राणी बनाती है, समाजीकरण कहलाती है(धर्मवीर, 2008:109)। प्रस्तुत अध्याय में राजनीतिक समाजीकरण के सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डाला गया है।

व्यक्ति के राजनीतिक समाजीकरण और सहभागिता में अभिवृत्ति और मूल्यों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती हैं। मानवीय व्यवहार बाह्य परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति की यांत्रिक प्रतिक्रिया मात्र नही है, बल्कि यह व्यवहार उसके विषिष्ट सामाजिक–साकृतिक परिवेष के प्रभाव से प्रभावित और नियन्त्रित भी है। राजनीतिक जीवन में व्यक्ति की रूचि और सहभागिता राजनीतिक संस्कृति में व्याप्त मूल्यों और मान्यताओं से अत्यधिक मात्रा में प्रभावित तथा निर्देषित होती हैं। व्यक्ति विभिन्न राजनीतिक मूल्यों, आदर्षो और मान्यताओं को अपने व्यक्तिव में आत्मसात करता है तथा उनके अनुरूप उसकी राजनीतिक अभिवृत्ति और व्यवहार का स्वरूप निर्धारित होता है।
राजनीतिक मूल्य एक ऐसे सामाजिक मानक है जो व्यक्ति के व्यवहार, रूचियों, विचारों एवं अन्तःक्रिया को परिभाषित करते है मूल्यों के द्वारा स्वीकृत या अस्वीकृत व्यवहारों की व्याख्या होती हैं। मूल्यों का अन्तरीकरण समाजीकरण के माध्यम से होता है इनके द्वारा व्यक्ति कार्य या व्यवहार को अपनाने की ओर प्ररित होता है जो इस विष्वास को प्रतिबिम्बित करते है की कोई स्थिति, दषा या वस्तु की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक वरीयता प्रदान करने के योग्य बनता हैं।

राजनीतिक व्यवस्था से सम्बन्धित मूल्यों एवं अभिवृत्तियों का विकास और स्थापना विभिन्न अभिकरणों के अन्तःक्रिया के माध्यम से होता है। सामान्यतः परिवार, शिक्षण संस्थायें, पड़ोस, ऐच्छिक संस्थायें, सूचना सम्प्रेषण के साधन, सरकार के दबाव समूह और राजनीतिक दल

व्यक्ति के राजनीतिक समाजीकरण में प्रभावी भूमिका निभाते हैं। इन्हीं से व्यक्ति के राजनीतिक जगत् के बारे प्रारम्भिक प्रशिक्षण होता है जो जीवन पर्यन्त परिवर्तित होता रहता हैं।

प्रस्तुत अध्ययन जनजातीय समाज में राजनीतिक अभिरूचि, चेतना, एवं मूल्यों के बदलते स्वरूप पर केन्द्रति किया। यह समझने का प्रयास किया गया कि किस प्रकार वर्तमान भारतीय राजनीतिक संस्कृति में प्रचलित मूल्य और मान्यताओं का जनजातीय समाज के लोगों पर प्रभाव पड़ रहा है। तथा उनका व्यक्तित्व और व्यवहार किस मात्रा में नवीन राजनीतिक मूल्यों जैसे–स्वतन्त्रता, समानता, सत्ता अनुशासन, नियमबद्धता, समूहबद्धता इत्यादि से प्रभावित हो रहा हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में जनजातीय समाज में राजनीतिक समाजीकरण से संबंधित उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों का विवेचन किया गया हैं साथ ही तुलना के लिये गैर–जनजातीय समाज से प्राप्त तथ्यों को भी साथ ही विवेचित किया गया हैं।

संचार के साधनों के प्रति रुचि एवं जागरूकता और राजनीतिक समाजीकरण

किसी भी व्यक्ति विशेष की राजनीतिक समाजीकरण या राजनीतिक सहभागिता के निर्धारण में सूचना सम्प्रेषण या संचार के साधनों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है। किसी भी राजनीतिक व्यवस्था की निरन्तरता एवं उसकी गतिशीलता के लिए यह आवश्यक है कि राजनीतिक महत्त्व की सूचनाएँ राजनीतिक व्यवस्था के एक शीर्ष से दूसरे शीर्ष तक संचारित हों एवं सूचना ग्रहण करने वाला व्यक्ति भी अपने सामाजिक–राजनीतिक परिवेश में घटित होने वाली घटनाओं के प्रति जागरूक एवं सचेत रहे। व्यक्ति, सामाजिक व्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था तीनों ही के लिए ज्ञान, मूल्य और अभिवृत्तियों से सम्बन्धित सूचनाओं का पारस्परिक आदान–प्रदान अत्यन्त आवश्यक है।

आधुनिक समाज सूचना–सम्प्रेषण के विभिन्न साधनों, नेतृत्व की लोकपरक नीतियों शासन के लोकतान्त्रात्मक विकेन्द्रीकरण, जनसक्रियता और जन सहभागिता की वृद्धि के साधनों तथा जनमत को प्रभावित करने वाले विभिन्न राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक विकल्पों के माध्यम से साधारण व्यक्ति के राजनीतिक बोधगम्यता और जागरूकता को विकसित करने का प्रयत्न करता है।

वर्तमान अध्ययन में जनजातीय समुदाय के उत्तरदाताओं की संचार के साधनों के उपयोग की प्रवृत्ति ज्ञात करना है, वे किस मात्रा में समाचार पत्र, रेडियो, सिनेमा, पत्र–पत्रिका इत्यादि के उपयोग की अध्ययन प्रवृत्ति रखते हैं तथा वह किस प्रकार के समाचारों और कार्यक्रमों में रुचि रखते हैं।

खबरों/समाचारों के लिए सम्प्रेषण माध्यमों का प्रयोग इस्तेमाल

आधुनिक जटिल समाज की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता सूचना सम्प्रेषण के नवीन साधनों जैसे समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा इत्यादि का प्रसार है। सूचना सम्प्रेषण के ये साधन व्यापक पैमाने पर समूह के सदस्यों के विचारों को प्रभावित और नियन्त्रित करते हैं। विचार और व्यवहार के निर्देशन में समाचार पत्र की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली है। समाचार पत्र दिन–प्रतिदिन घटित होने वाली क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं की जानकारी प्रदान करके व्यक्ति के विचारों और मनोवृत्तियों को एक निश्चित दिशा प्रदान करते हैं। जिसके बारे में उत्तरदाताओं से जानकारी ली गयी जिसे सारणी क्रमांक 1 में वर्गीकृत किया गया है।

सारणी क्रमांक 1
खबरों/समाचारों के लिए सम्प्रेषण माध्यमों का प्रयोग

क्र सं.	खबरों/समाचारों के लिए इन सब चीजों का इस्तेमाल	जनजातीय आवृत्ति (प्रतिशत)	गैर जनजातीय आवृत्ति (प्रतिशत)
1	टेलीविजन देखना	92 (51.1)	51 (85.0)
2	रेडियो सुनना	120 (66.6)	48 (80.0)
3	अखबार पढना	85 (47.2)	45 (75.0)
4	इंटरनेट का इंस्तेमाल/उपयोग	52 (28.8)	24 (40.0)

सारणी से स्पष्ट हैं कि 5.23 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाता खबरों समाचारों के लिए टेलीविजन देखते हैं, 66.6 प्रतिशत रेडियो सुनते हैं, 47.2 प्रतिशत अखबार पढ़ते हैं एवं 28.8 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाता इंटरनेट का भी इस्तेमाल करते हैं जबकि 85.0 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाता खबरों समाचारों के लिए टेलीविजन देखते हैं, 80.0 प्रतिशत रेडियों एवं 75.0 प्रतिशत अखबार पढ़ते हैं। 40.0 प्रतिशत इंटरनेट का भी इस्तेमाल करते हैं। अतः विश्लेषण से स्पष्ट है कि बहुसंख्यक जनजातीय उत्तरदाता खबरों/समाचारों के लिए रेडियो सुनते हैं जबकिगैर–जनजातीय उत्तरदाता खबरों/समाचारों हेतु टेलीविजन देखते हैं।

राजनीति और सरकार से संबंधित समाचार सुनना

राजनीति और सरकार से संबधित समाचार सुनने की प्रवृत्ति जनजातीय समाज के षिक्षित युवा सदस्यों के राजनीतिक समाजीकरण और अभिवृत्तियों के निर्माण में समाचार पत्र की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। राजनीति और सरकार से संबधित समाचार सुनने की प्रवृत्ति को सारणी क्रमांक 2 में स्पष्ट किया गया है।

सारणी क्रमांक 2
राजनीति और सरकार से संबंधित समाचार सुनना

क्र सं.	राजनीति और सरकार से संबंधित समाचार सुनना	जनजातीय आवृत्ति (प्रतिशत)	गैर जनजातीय आवृत्ति (प्रतिशत)
1	प्रतिदिन	56 (31.1)	22 (36.6)
2	सप्ताह में एक या दो बार	60 (33.3)	12 (20.0)
3	सप्ताह में कई बार	39 (21.7)	13 (21.6)
4	कभी नही	25 (13.9)	6 (10.0)
	कुल	180 (100)	60 (100)

सारणी क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि जनजातीय उत्तरदाता में 31.1 प्रतिशत प्रतिदिन राजनीति और सरकार से सम्बन्धित समाचार सुनते हैं, 33.3 प्रतिशत सप्ताह में एक या दो बार राजनीति और सरकार से सम्बन्धित समाचार सुनते हैं, 21.7 प्रतिशत सप्ताह में कई बार समाचार सुनते हैं तथा 13.9 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाता राजनीति और सरकार से सम्बन्धित समाचार कभी नहीं सुनते हैं जबकि 36.6 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाता प्रतिदिन राजनीति और सरकार से सम्बन्धित समाचार सुनते हैं, 20.0 प्रतिशत सप्ताह में एक या दो बार राजनीति और सरकार से सम्बन्धित समाचार सुनते हैं, 21.6 प्रतिशत सप्ताह में कई बार समाचार सुनते हैं तथा 10.0 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाता राजनीति और सरकार से सम्बन्धित समाचार कभी नहीं सुनते हैं।उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि बहुसंख्यक जनजातीय उत्तरदाता राजनीति और सरकार से संबंधित समाचार सप्ताह में एक या दो बार सुनते हैं जबकिगैर–जनजातीय उत्तरदाता राजनीति और सरकार से संबंधित समाचार प्रतिदिन सुनते हैं।

इंटरनेट पर किस नेटवर्किंग साइट का प्रयोग करते हैं?

जनजातीय समाज के उत्तरदाताओं से इंटरनेट पर नेटवर्कीगं साइट का इस्तेमाल से संबधित जानकारी प्राप्त की गयी जिसे सारणी क्रमांक 3 में प्रदर्षित किया गया है।

सारणी क्रमांक 3
इंटरनेट पर किस नेटवर्किंग साइट का प्रयोग करते है

क्र सं.	इंटरनेट पर अकाउंटस	जनजातीय आवृत्ति (प्रतिशत)	गैर जनजातीय आवृत्ति (प्रतिशत)
1	फेसबुक एकाउंट	27 (15.0)	14 (23.9)
2	ट्विटर एकाउंट	8 (4.4)	6 (10.0)
3	ई–मेल एकाउंट	43 (23.8)	33 (55.0)

सारणी क्रमांक 3 से स्पष्ट है कि 15.0 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाता फेसबुक एकाउंट का उपयोग करते हैं, 4.4 प्रतिशत ट्विटर एकाउंट का इस्तेमाल करते हैं, 23.8 प्रतिशत ई–मेल एकाउंट का प्रयोग करते हैं जबकि 23.9 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाता फेसबुक एकाउंट का उपयोग करते हैं, 10.0 प्रतिशत ट्विटर एकाउंट का इस्तेमाल करते है एवं 55.0 प्रतिशत ई–मेल एकाउंट का प्रयोग करते हैं। अतः स्पष्ट है कि जनजातीय उत्तरदाता, गैर–जनजातीय उत्तरदाताओं की अपेक्षा, इंटरनेट पर नेटवर्किंग साइट का प्रयोग कम करते हैं।

समाचार पत्र पढ़ने की प्रवृत्ति

समाज के शिक्षित व्यक्तियों में राजनीतिक समाजीकरण एवं अभिवृत्तियों के निर्माण में समाचार पत्र की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। समाचार पत्र सूचना सम्प्रेषण का एक ऐसा साधन है जो मुख्यतः शिक्षित व्यक्ति से सम्बन्धित है। समाचार पत्र पढने की प्रवृत्ति के बारे में उत्तदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी। प्राप्त तथ्यों को सारणी क्रमांक 4 मे प्रदर्षित किया गया है।

सारणी क्रमांक 4
समाचार पत्र पढना

क्र. सं.	आप समाचार पत्र पढते हैं	जनजातीय आवृत्ति (प्रति[illegible]त)	गैर जनजातीय आवृत्ति (प्रति[illegible]त)
1	नियमित	38 (24.6)	28 (58.3)
2	कभी–कभी	75 (48.7)	15 (31.2)
3	कभी नहीं	41 (26.6)	5 (10.4)
	कुल	154 (100)	48 (100)

सारणी क्रमांक 4 से स्पष्ट है कि 24.6 प्रतिशत जनजातीय उत्तरदाता नियमित समाचार पत्र पढ़ते हैं, 48.7 प्रतिशत कभी–कभी समाचार पत्र पढ़ते हैं और 26.6 प्रतिशत उत्तरदाता कभी समाचार पत्र नहीं पढ़ते हैं जबकि 58.3 प्रतिशत गैर–जनजातीय उत्तरदाता नियमित समाचार पत्र पढ़ते हैं, 31.2 प्रतिशत कभी–कभी समाचार पत्र पढ़ते हैं और 10.4 प्रतिशत उत्तरदाता कभी समाचार पत्र नहीं पढ़ते हैं। स्पष्ट है कि बहुसंख्यक जनजातीय उत्तरदाता कभी–कभी समाचार पत्र पढ़ते हैं। जबकि बहुसंख्यक गैर–जनजातीय उत्तरदाता नियमित समाचार पत्र पढ़ते हैं।

अतः स्पष्ट है कि समाज के शिक्षित व्यक्तियों में राजनीतिक समाजीकरण एवं अभिवृत्तियों के निर्माण में समाचार पत्र की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। समाचार पत्र सूचना सम्प्रेषण का एक ऐसा साधन है जो मुख्यतः शिक्षित व्यक्ति से सम्बन्धित है।अधिकतर शिक्षित जनजातीयसदस्य समाचार पत्र नियमित न पढ़कर कभी–कभार पढ़ते हैं और वह भी स्थानीय स्तर का समाचार पत्र पढ़ते हैं। सूचना सम्प्रेषण के साधनों में इंटरनेट ई–मेल आदि का प्रयोग भी जनजातीय सदस्यों ने प्रारंभ किया है। यद्यपि यह गैर–जनजातीय सदस्य के मुकाबले बहुत

कम है। अध्ययन में सम्मिलित सदस्यों द्वारा इंटरनेट का उपयोग एक विशिष्ट अभिरुचि का परिचायक है, बल्कि उनके उच्च सामाजिक और राजनीतिक विगोपन स्तर को भी सूचित करता है।

जनजातीय समाज के बहुसंख्य लोग खबरों–समचारों के लिये रेडियो सुनते हैं।सप्ताह में प्रतिदिन एवं कई बार राजनीतिक और सरकार से सम्बन्धित समाचार सुनने वाले सदस्योंकी संख्या अधिक हैसाथ ही मनोरंजक कार्यक्रम भी सुनते हैं।

राजनीतिक खबरों और मनोरंजन के महत्त्वपूर्ण उपकरण के रूप में टेलीविजन की भूमिका ने राजनीतिक समाजीकरण की प्रकिया को किस स्तर तक प्रभावित किया है।यह जानने के लिए टेलीविजन के प्रति अभिरुचि से सम्बन्धित उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी। टेलीविजन के संदर्भ में देखें तो सर्वाधिक जनजातीय सदस्य कार्यकम के आधार पर टेलीविजन देखते हैं। किन्तु यह प्रतिशत गैर–जनजातीय सदस्यों के प्रतिशत से कम है। राजनीतिक और सरकार से संबंधित समाचार देखने एवं सुनने के बारे में सर्वाधिक जनजातीयसदस्य सप्ताह में एक या दो बार समाचार सुनते हैं एवं टेलीविजन पर न्यूज चैनल्स देखना पसन्द करते हैं।

संदर्भ

आमण्ड, जी ए एण्ड पॉवेल, जीबी (1966), ***कम्पेरेटिव पॉलिटिक्सः ए डेवलपमेन्टएप्रोच,***लिटिल ब्राउन एण्ड कम्पनी, बोस्टन पृ. 27।

आमण्ड, जी ए एण्ड वर्बा, एस (1978),***द सिविक कल्वर,*** प्रिन्सटिऑन यूनिवर्सिटी प्रिन्सटिऑन, पृ. 27।

अग्रवाल, सुरेश (2005), ***जनसंचार माध्यम,*** नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 12–15।

भाम्बरी, सी पी (1973), ***द अरबन वोटरः म्यूनिसिपल इलेक्शन इन राजस्थान. अ इम्पेरिकल स्टडी,***नेशनल पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृ. 173–174।

चापी, एल (1971), पेरेन्टल ऑफ चिल्ड्रन न्यूज मीडिया, ***अमेरिकन बिहेवियर साइन्टिस्ट,*** पृ. 83।

डयूरॉल, आर ई एण्ड बीक,जे ए, (1977), ***ए पॉलिटिकल सोशलाईजेशन,*** नेल्सन, लंदन पृ. 202।

डॉसन, आर ई एण्ड हाूज, जे ए (1969), ***पॉलिटिकल सोशलाईजेशन,*** लिटिल ब्राउनएण्ड कम्पनी, बोस्टन, पृ. 289, 17।

देसाई, एम बी(1977), ***कम्यूनिकेशन पॉलिसीज इन इंडिया,*** यूनेस्को प्रकाशन यूनेस्को, पृ. 18–19।

धर्मवीर, (2008), ***राजनीतिक समाजशास्त्र,*** राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

ईस्टन, डी एण्ड डेनिस, जे (1969), ***चिल्ड्रन इन द पॉलिटिकल सिस्टम,*** मेग्रोहिल, न्यूयार्क, पृ. 7।

ईस्टन, डेविड, (1986), दी थ्योरिटिकल रिलिवेन्स ऑफ पॉलिटिकल सोशलाईजेशन, ***जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस,*** पृ. 218।

गेना, सी बी (2008), ***तुलनात्मक राजनीतिक,*** विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नोएडा (यू. पी.)।

ग्रीनस्टीन, एफ आर(1968), पॉलिटिकल सोशलाईजेशन, *इंटरनेशनल* ***इनसायक्लोपीडिया ऑफ द सो[illegible]ल साइंस,***वाल्यूम 14., न्यूयार्क।

ग्रीनस्टेन, (1968), पॉलिटिकल सोशलाईजेशन, ***इंटरनेशनल इनसायक्लोपीडिया ऑफ दसोशल साइन्सेज,*** मेकमिलन एण्ड फ्री प्रेस, न्यूयार्क, पृ. 555।

हाइमन, एच एच (1959), ***पॉलिटिकल*** सोशलाईजेशन, फ्री प्रेस, पृ. 17।

कुप्पूस्वामी, बी (1976), ***कम्यूनिकेशन एण्ड सोशल डेवलपमेन्ट इन इंडिया,***स्टर्लिंग पब्लिशर्स नई दिल्ली, पृ. 10–12।

लॉयड, सी एल (1967), ***कम्यूनिकेशन असेसमेन्टएण्ड इण्टरवेंशन स्ट्रेटजीज,*** यूनिवर्सिटी पार्क प्रेस, लन्दन, पृ. 41।

लर्नर, डी (1958), ***द पॉसिंग ऑफ ट्रेडिशनल सोसायटी,*** नेल्सन पृ. 112।

मेथ्यूस, डी आर एण्ड प्रोथो, जे डब्ल्यू (1957), ***निग्रास एण्ड द न्यू साउथ पॉलिटिक्स,*** फ्री प्रेस, पृ. 37।

मैसियालस, बयीरोन जी (1969): ***एजूकेशन एण्ड दि पॉलिटिकल सिस्टम,*** एडीसन वैस्ले पब्लिशिंग कम्पनी, केलिफोर्निया पृ. 18–20।

मेहता, डी एस(1980), ***पब्लिक रिलेशन्स इन इंडिया,*** एलाइड पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. 68।

मेट्रान, आर के (1968), ***सोशल थ्योरी एण्ड सोशल स्ट्रक्चर,*** फ्री प्रेस, न्यूयार्क पृ. 119।

पाई, लूसियन (1972), ***कम्यूनिकेशन एण्ड पॉलिटिकल डेवलपमेंट,*** राधाकृष्ण प्रकाशन, न्यू देहली, पृ. 4।

रष, एम एण्ड अल्थाफ, पी एन (1971), ***इन्ट्रोडक्श टू पॉलिटिकल सोशलाईजेशन,*** नेल्सन लंदन, पृ. 160, 44।

रॉय, प्रशांत (1978), पॉलिटिकल सोशलाईजेशन, ***इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस,*** अप्रैल–जून पृ. 136–138।

स्टेबी, बी (1978), ***पॉलिटिकल सोशलाईजेशन इन वैस्टर्न सोसायटी,*** अर्नोल्ड–हीनमैन, न्यू देहली पृ. 2।

स्टेवर्ड, एल टी (1977), ***टब्स एण्ड सिल्विया मासः ह्यूमन कम्युनिके□ान सिस्टम,*** रेन्डम हाउस पब्लिकेशन, पृ. 9–10।

शर्मा, एस सी (1977), ***मीडिया कम्यूनिकेशन एण्ड डेवलपमेंट,*** रावत पब्लिकेशन, जयपुर पृ. 81।

शर्मा, कुमुद (1985), ***राजनैतिक समाजशास्त्र,*** श्री पब्लिशिंग हाउस अजमेरी गेट दिल्ली, पृ. 198–199।

LBP PUBLICATION